रामलोचन ठाकुर

जन्म : 18 मार्च, 1949 ई० ।

जन्म-स्थान : बाबपाली (पालीमोहन) खजौली, मधुबनी

कृति : मौलिक-पद्य– 'इतिहासहंता', 'माटिपानिक गीत', 'देशक नाम छलै सोन चिड़ैया', 'अपूर्वा', 'लाखप्रश्न अनुत्तरित' ।

गद्य– 'बेताल कथा', 'मैथिली लोककथा', 'स्मृतिक धोखरल रंग', 'आँखि मुनने आँखि खोलने' ।

अनुवाद : प्रतिध्वनि, जादूगर, फ्रांस, रिहर्सल,

श्री रामलोचन ठाकुर मैथिली जगतक सुपरिचित हस्ताक्षर छथि। मूलतः ई कवि-गीतकार छथि। व्यंग्य, लोक कथा आ आलोचना लिखबामे सेहो सिद्धहस्त छथि। ई निष्ठापूर्वक वर्ग संघर्षक झंडा उठौनिहार लोक छथि, मुदा परम्पराक प्रति अत्यन्त अनुराग छनि ।

काव्य-सन्दर्भ : धनकटनीक गीतमे श्रमिक वर्गक मध्य सुषुप्त क्रान्तिक भावनाकेँ उजागर कयल गेल अछि ।

□

धनकटनीक गीत

चढ़ा ले रओ बुधना तोँ हँसुआ पर शान रओ ।
हँसुए मे जान अपन हँसुए परान छइ ।
हँसुए छै अप्पन गुमान आर शान रओ ॥

हम सब कमायब आर खायत केओ आन
लागय छगुन्ता ई छइ केहेन विधान
ककरा लय धर्म-कर्म ककरा लय देश छइ
अमरूख के ठकबा लय छइ भगवान रओ ॥

सोनित सुखा कऽ पसेना बनेलिऐ
तकरा चुआ कऽ जे खेतो पटेलिऐ
उगिलै तेँ धरती ई सोना सुगन्धि भरल
मरुआ खेसारी गहूम आर धान रओ ॥

रोपने छी कटबै आ घर अपन भरबै
अन्नक अभावे ने आब हम मरबै
ठकलक बहुत मुदा आब ने ठकेबै हम
कालोसँ लड़बै अरोपि देबै जान रओ ॥

●

प्रश्न ओ अभ्यास

1. बुधनाकेँ ज्ञान, प्राण, शान ओ गुमान हँसुआ कोना छैक ?
2. बुधना कमायत आओर आन खायत कोना ? फरिछा कऽ लिखू ।
3. मूर्ख कोना ठकाइत रहल अछि भगवानक नाम पर-स्पष्ट करू ।
4. पहिने खेतक अन्न कतय जाइत छल ?
5. एहि बेर खेतक अन्न ककरा घरमे जायत ?
6. प्रस्तुत कवितामे श्रमिककेँ अपन अधिकारक ज्ञा कराओल गेल अछि-स्पष्ट करू ?

7. धनकटनी गीतक सारांश लिखू ।

गतिविधि :

1. निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखू- शान, छगुन्ता, अमरुख, कल, विधान
2. अगहनीक गीत बनाकऽ गाऊ, सस्वर ।
3. गाम-घरमे अगहनक समय, बड़का-छोटका वास्ते केहन रहैत अछि? आपसमे चर्चा करू ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे 'मूर्ख'केँ भगवानक नाम पर कोना लोक ठकैत छैक- विस्तारपूर्वक चर्चा कऽ रूढ़ि भंजनक दिशामे छात्रकेँ प्रेरित करथि।

□